B.A. III Honours
Sociology
Paper V
M.A. JOHN

EMILE DURKHEIM

परिचय (Introduction)

Emile Durkheim का जन्म 1858 में फ्रांस के एपिनल (Epinal) नामक स्थान पर एक धार्मिक यहूदी परिवार में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा पेरिस में ही हुई 1882 तक अपनी शिक्षा समाप्त करके और उसी वर्ष से अध्यापन का कार्य आरम्भ कर दिया। उच्च अध्ययन के लिये उसे फिर जर्मनी जाना पड़ा। और 1885-86 से लेकर 1893 तक वह अध्ययन तथा अध्यापन दोनों कार्यों को सम्पादित करते रहे। समाज शास्त्र के क्षेत्र में उन्होंने जो महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत किया उसके लिये एक लम्बे समय तक याद किये जाते रहेंगे। August Comte ने जिस समाजशास्त्र की नींव रखी थी Durkheim ने उसके ऊपर एक विशाल भवन का निर्माण करने का कार्य किया है। इसी लिये उन्हें 'विषयाश्रित समाजशास्त्र के पिता' (Father of Objective Sociology) के रूप में जाना जाता है। आरम्भ में उन्होंने दर्शनशास्त्र, सामाजिक विज्ञानों एवं शिक्षा, सामाजिक विज्ञान के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया फिर 1913 में उन्हें समाजशास्त्र एवं शिक्षाशास्त्र का प्रोफेसर बना दिया गया, इस प्रकार Durkheim फ्रांस में समाजशास्त्र विषय के पहले प्राध्यापक थे।

Durkheim के विचारों पर तत्कालीन समाज और संस्कृति का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। Durkheim के विचारों पर जिन विद्वानों का प्रभाव पड़ा, उनमें Comte सर्वप्रथम

Scanned with CamScanner

है उसके अतिरिक्त Spencer तथा William Wundt ने भी उनके विचारों को बहुत अधिक प्रभावित किया है।

समाजशास्त्र के क्षेत्र में उन्होंने बहुत महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत किये हैं। उनके द्वारा प्रस्तुत सिद्धान्तों में "आत्महत्या" का सिद्धान्त बहु चर्चित सिद्धान्त रहा है। समाजशास्त्र के क्षेत्र में यह सबसे पहला वैज्ञानिक अध्ययन कहा जा सकता है जिसे वैज्ञानिक विधियों के प्रयोग के आधार पर प्रस्तुत किया गया है।

THEORY OF SUICIDE

Durkheim ने यह विचार दिया कि मनुष्य की इच्छाएँ दो प्रकार की होती हैं जिन्हें सीमित तथा असीमित इच्छाएँ कहा जा सकता है। सीमित इच्छाओं का सम्बन्ध भौतिक तथा असीमित इच्छाओं का सम्बन्ध अभौतिक वस्तुओं से होता है। सीमित इच्छाओं पर मनुष्य नियन्त्रण रख लेता है परन्तु असीमित इच्छाओं पर नियन्त्रण स्थापित करना कठिन होता है जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति विचलन कारी व्यवहार करने लगता है। जो उसे आत्महत्या तक करने पर मजबूर कर देते हैं।

आत्महत्या व्यक्तिगत विघटन अति घृणित और भयंकर रूप है जिसमें व्यक्ति अपनी इच्छा से अपनी आत्मा का हनन करता है। जब व्यक्ति अपनी जीवात्मक समस्याओं का समाधान करने में असफल हो जाता है तो वह आत्महत्या द्वारा अपनी समस्याओं पर सफलता प्राप्त करने का

प्रयास करता है। British Encyclopedia में लिखी परिभाषा के अनुसार "आत्म हत्या इच्छा से और ज्ञान पूर्वक की जाने वाली आत्म हनन की प्रक्रिया है"

Durkheim ने आत्म हत्या के तीन प्रकार बताये हैं।

(1) स्वार्थमय आत्महत्या (Egoistic Suicide):- इसमें स्वार्थ का तत्व प्रमुख रूप से पाया जाता है। इसमें व्यक्तिवाद की भावना प्रबल होती है और व्यक्तिक स्वतन्त्रता पर बल दिया जाने लगता है। व्यक्ति के समाज से सम्बंध टूटने लगते हैं अर्थात नियन्त्रण शिथिल पड जाते हैं। सामाजिक एकता समाप्त हो जाता है। व्यक्ति अपने आप में इतना मग्न हो जाता है कि दूसरों से अलग हो जाता है। अब व्यक्ति अत्यन्त एकाकी हो जाता तो उनके लिये आत्म हत्या सरल हो जाती है। व्यक्तिवादिता के विकास के कारण आधुनिक युग में इस प्रकार की आत्म हत्यायें बढ रही हैं।

(2) परार्थमय आत्महत्या (Altruistic Suicide):- इस प्रकार की आत्म हत्या उस समय होती है जब व्यक्ति और समूह के बीच घनिष्ठ और निकट सम्बंध होता है। जिस समाज में स्थिरता, व्यक्तिवाद का महत्व, समूहवाद की भावना अधिक पायी जाती है वहाँ इस प्रकार की आत्म हत्या पायी जाती है। जब व्यक्ति समाज में इतना घुल मिल जाता है कि समाज से अलग अस्तित्व नहीं समझता है तो वहाँ इस प्रकार की आत्म हत्यायें अधिक होती हैं। व्यक्ति

हर समय देश तथा समाज के लिये अपनी जान निछावर करने के लिये तैयार रहता है, जैसा की दूसरे विश्व युद्ध के समय एक जापानी पाइलट ने अमरीकी युद्धपोत के चिमनी में अपने जहाज को मार कर अपनी जान दे दी।

(3) स्वभाविक आत्म हत्या (Anomie Suicide)

इस प्रकार की आत्महत्यायें सामाजिक परिस्थिती का परिणाम होती हैं। जब एकाएक समाज का संतुलन समाप्त हो जाता है, ऐसी अवस्था में व्यक्ति अपने को समाज की बदलती हुई परिस्थितियों से समनजस्य नहीं कर पाते हैं, व आत्म हत्या कर बैठते हैं। जैसे व्यापार में नुकसान होने पर बेरोजगार होने या कर्ज नहीं अदा कर पाने की स्थिति में जो हत्या होती है उसे Anomic Suicide कहा जाता है।

Durkheim ने समाजशास्त्र में वैज्ञानिक अध्ययन की आधार शीला अवश्य रखी परन्तु अनेक कारणों से उसके सिद्धान्तों की आलोचनायें भी की गई हैं।

आत्म हत्या के सिद्धान्त में Durkheim ने व्यक्तिगत प्रेरणाओं तथा सांस्कृतिक कारकों को सम्मिलित नहीं किया।

Durkheim ने अपने सिद्धान्तों में व्यक्तिगत कारणों को अधिक महत्व दिया है जबकि समाज और व्यक्ति दोनों आवश्यक हैं।

—x—